अरुण कमल

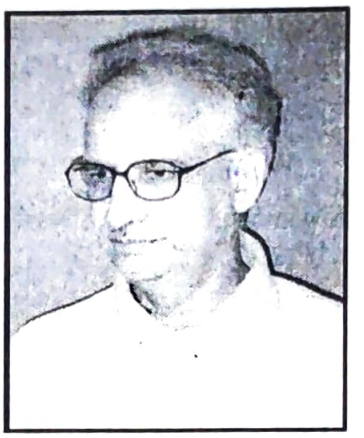

जन्म	:	15 फरवरी 1954 ।
जन्म-स्थान	:	नासरीगंज, जिला - रोहतास, बिहार ।
माता-पिता	:	सुरेश्वरी देवी एवं कपिलदेव मुनि ।
शिक्षा	:	प्रारंभिक शिक्षा अनेक गाँव-कस्बों - बारुन, शेरघाटी, गया, कुदरा में । माध्यमिक शिक्षा हसन बाजार से । उच्च शिक्षा पटना विश्वविद्यालय, पटना से ।
पुरस्कार	:	भारतभूषण अग्रवाल स्मृति पुरस्कार (1980), सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार (1989), श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार (1990), रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार (1996), शमशेर सम्मान (1997) , 'नए इलाके में' कविता संकलन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (1998) ।
सम्मान	:	एफ्रो एशियाई युवा लेखक सम्मेलन, श्राजाविले, कांगो में भारत के प्रतिभागी । साहित्य अकादमी की सामान्य परिषद् एवं सलाहकार समिति के सदस्य, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला की सोसायटी के सदस्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की कार्य समिति के सदस्य ।
यात्राएँ	:	कांगो, रूस, चीन, इंग्लैंड, पाकिस्तान एवं म्यांमार की साहित्यिक यात्राएँ ।
पत्रकारिता	:	'प्रभात खबर', राँची के लिए 'अनुस्वार' नामक अनुवाद स्तंभ । 'नवभारत टाइम्स' पटना के लिए 'जन-गण-मन' स्तंभ में टिप्पणियाँ । 'लिटरेट वर्ल्ड' इंटरनेट पत्रिका के लिए स्तंभ लेखन ।
कृतियाँ	:	अपनी केवल धार, सबूत, नए इलाके में, पुतली में संसार (कविता संग्रह); कविता और समय (आलोचना); वियतनामी कवि 'तो हू' की कविताओं-टिप्पणियों की पुस्तिका, रूसी कवि मायकोव्स्की की आत्मकथा, अंग्रेजी में 'वॉयसेज' नाम से भारतीय युवा कविता, किपलिंग का 'जंगल बुक' (सभी अनुवाद); साथ ही देश-विदेश के अनेक साहित्यकारों की कविताओं और लेखों के अनुवाद पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित । अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में कविताएँ अनूदित । उर्दू तथा पंजाबी में कविता पुस्तकें भाषांतरित रूप में प्रकाशित ।
संप्रति	:	पटना विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर एवं 'आलोचना' पत्रिका के संपादक ।

बीसवीं शती के आठवें दशक में लेखन प्रारंभ करने वाले अरुण कमल हिंदी की प्रगतिशील यथार्थवादी भावधारा के महत्त्वपूर्ण कवि हैं । वे बिना किसी बड़े अंतराल या अवरोध के लगातार लिखते आ रहे हैं । उनके लेखन में उत्तरोत्तर निखार और विकास दिखाई पड़ता है; दृष्टिकोण, सोच और संवेदना में

एक दृढ़ता, गहराई, व्यापकता और अमोघता परिलक्षित होती है । इससे यह तो सहज स्पष्ट है कि कविता और कवि-कर्म में उनकी संशयरहित गहरी निष्ठा है और यह निष्ठा ओढ़ी हुई, अपना ली गई या प्राप्त नहीं, बल्कि उनकी अपनी कमाई है । यह जीवन, मनुष्य, समाज और इनकी बेहतरी के लिए किए जा रहे अनवरत कर्म एवं श्रम में उनके अटूट विश्वास का प्रतिफल है । ऐसे समय में जब मनुष्य और उसकी गाढ़ी कमाई की कृतियों के व्यापक अवमूल्यन, क्षरण और विनाश की तेज रोगावह हवाएँ चल रही हों, इस विश्वास और निष्ठा को बचाए रखना ही नहीं, बढ़ाते जाना, अपने आप में एक कठिन जीवट का तपोमय कार्य है । 'तपोमय' इसलिए कि इसमें एक रात-दिन का होम और पावनता है । यह पावनता अरुण कमल की कविता में अनुल्लिखित दिनचर्या की तरह उपस्थित है । अरुण कमल का कोई निजी स्वायत्त एकांत नहीं, रचना का एकांत अवश्य है; जिसमें मनुष्य, उसकी हलचलों और साँसों की ऊष्मा है; ऐसी ऊष्मा, जो रचना या रचना-कर्म के एकांत को निर्जन या बंजर नहीं बनने देती; उसे लगातार उर्वर प्रदेश बनाए रखती है ।

अरुण कमल ने परंपरा से अपना एक जीवंत स्वतंत्र संबंध बनाया है । उनकी परंपरा में हिंदी, भारतीय और वैश्विक प्रविष्टियाँ भी हैं । हिंदी और भारतीय उसकी धातु है, प्रकृति है, तो वैश्विक उसका परिवेश और प्रत्यय । किंतु उनकी कविता परंपरा का केंचुल छोड़ता, पचखियाँ फेंकता प्राक्तन विस्तार नहीं, उसका पुनर्भव है । उद्भिज की तरह मौलिक पुनर्भव । उनके खाते में, यह सच है कि अभी कुछ अनुपम और अद्वितीय उपलब्धियाँ नहीं हैं, किंतु अभी यंह चढ़ती दोपहरी है; दिवस का परिपाक बाकी है ।

यहाँ इस पुस्तक में संकलित कविता कवि के नवीनतम कविता संग्रह 'पुतली में संसार' से ली गई है । मातृभूमि शीर्षक यह कविता अपनी विषय-वस्तु, संवेदना और कलात्मकता के कारण समसामयिक कविता में एक दुर्लभ उदाहरण है । इस कविता में जननी, मातृभूमि और मातृभाषा की मातृ-प्रतिमाएँ बिना आधिदैविक अथवा धार्मिक-दार्शनिक प्रतिपत्तियों, आशयों या विवक्षाओं के, एक दूसरे में घुल-मिलकर एकाकार हो जाती हैं । ऐसा निरे भावात्मक आरोपण द्वारा नहीं होता बल्कि संवेदनात्मक वस्तुसूत्रों द्वारा अमूर्त्तन की सर्जनात्मक प्रक्रिया द्वारा यह घटित होता है । माँ, मातृभूमि और परोक्षत: मातृभाषा की यह संश्लिष्ट प्रतिमा व्यक्ति, देश और काल की सीमित परिधियों से मुक्त होकर एक ऐसी विराट् चेतन सत्ता बन जाती है जो दु:ख-ताप, रोग-शोक को हरनेवाली करुणा तथा तृप्ति-सुख, शांति-प्रेम और वात्सल्य से भरी हुई है ।

♦ ♦ ♦

''चारों ओर अँधेरा छाया
मैं भी उठूँ जला लूँ बत्ती
जितनी भी है दीप्ति भुवन में
सब मेरी पुतली में कसती ।''

(जितनी भी है दीप्ति : नये इलाके में)
–अरुण कमल

"अरुण कमल ने जीवन के सौंदर्य और संघर्ष दोनों को नए बिंबों में प्रकट किया है । वे खेतों-बधारों और मैदानों के कवि हैं । उनकी कविताएँ मनुष्य के स्वाभिमान के लिए संघर्ष करती हैं ।"

(हिंदुस्तान, पटना, 8 जुलाई 2007)
–महाश्वेता देवी

मातृभूमि

आज इस शाम जब मैं भींजता खड़ा हूँ आसमान और धरती
के बीच
तब अचानक मुझे लगता है यही तो तुम हो मेरी माँ मेरी
मातृभूमि
धान के पौधों ने तुम्हें इतना ढँक दिया है कि मुझे रास्ता तक
नहीं सूझता
और मैं मेले में खोए बच्चे सा दौड़ता हूँ तुम्हारी ओर
जैसे वह समुद्र जो दौड़ता आ रहा है छाती के सारे बटन खोले
हहाता
और उठती है शंखध्वनि कंदराओं के अंधकार को हिलोड़ती
ये बकरियाँ जो पहली बूँद गिरते ही भागीं और छिप गई पेड़
की ओट में
सिंधु घाटी का वह साँढ़ चौड़े पट्टे वाला जो भींगे जा रहा है
पूरी सड़क छेके
वे मजदूर जो सोख रहे हैं बारिश मिट्टी के ढेले की तरह
घर के आँगन में वो नवोढ़ा भींगती नाचती
और काले पंखों के नीचे कौवों के सफेद रोएँ तक भींगते
और इलायची के छोटे-छोटे दाने इतने प्यार से गुत्थमगुत्था
ये सब तुम्हीं तो हो
कई दिनों से भूखा प्यासा तुम्हें ही तो ढूँढ़ रहा था चारों तरफ
आज जब भीख में मुट्ठी भर अनाज भी दुर्लभ है
तब चारों तरफ क्यों इतनी भाप फैल रही है गर्म रोटी की
लगता है मेरी माँ आ रही है नक्काशीदार रूमाल से ढँकी
तश्तरी में
खुबानियाँ अखरोट मखाने और काजू भरे

लगता है मेरी माँ आ रही है हाथ में गर्म दूध का गिलास लिए
ये सारे बच्चे तुम्हारी रसोई की चौखट पर कब से खड़े हैं माँ
धरती का रंग हरा होता है फिर सुनहला फिर धूसर
छप्परों से इतना धुआँ उठता है और गिर जाता है
पर वहीं के वहीं हैं घर से निकाले ये बच्चे तुम्हारी देहरी पर
सिर टेक सो रहे माँ
ये बच्चे कालाहाँडी के
ये आंध्र के किसानों के बच्चे ये पलामू के पट्टन नरौदा पटिया
के
ये यतीम ये अनाथ ये बंधुआ
इनके माथे पर हाथ फेर दो माँ
इनके भींगे केश सँवार दो अपने श्यामल हाथों से-
तुम किसकी माँ हो मेरी मातृभूमि ?
मेरे थके माथे पर हाथ फेरती तुम्हीं तो हो मुझे प्यार से तकती
और मैं भींज रहा हूँ
नाच रही धरती नाचता आसमान मेरी कील पर नाचता नाचता
मैं खड़ा रहा भींजता बीचोंबीच ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. यह कविता किसे संबोधित है ?
2. कवि ने स्वयं को मेले में खोए बच्चे-सा दौड़ता कहा है । उन्होंने अपनी गति की तुलना समुद्र से की है । कवि ने ऐसी तुलना क्यों की है ? काव्य पंक्तियों को उद्धृत करते हुए स्पष्ट करें ।
3. 'वे मजदूर जो सोख रहे हैं बारिश मिट्टी के ढेले की तरह' कवि ने मजदूरों के लिए ऐसी उपमा क्यों दी है ?
4. नीचे उद्धृत काव्य पंक्तियों का मर्म उद्घाटित करें -

   ''घर के आंगन में वो नवोढ़ा भींगती नाचती
   और काले पंखों के नीचे कौवों के सफेद रोएँ तक भींगते
   और इलायची के छोटे-छोटे दाने इतने प्यार से गुत्थमगुत्था
   ये सब तुम्हीं तो हो''

5. ''आज जब भीख में मुट्ठी भर अनाज भी दुर्लभ है
तब चारों तरफ क्यों इतनी भाप फैल रही है गर्म रोटी की''

-यह कैसी भाप है ? इस भाप के इतना फैलने में किस तरह की व्यंजना है ?

6. कई दिनों से भूखे-प्यासे कवि को माँ किस रूप में दिखलाई पड़ती है ? कवि ने किन स्थानों के बच्चों का उल्लेख कविता में किया है, और क्यों ?

7. ''ये यतीम ये अनाथ ये बंधुआ
इनके माथे पर हाथ फेर दो माँ
इनके भींगे केश सँवार दो अपने श्यामल हाथों से''

-इन पंक्तियों का अर्थ लिखें । कवि ने यहाँ 'भींगे केश' क्यों लिखा है ? अपनी कल्पना से उत्तर दें ।

8. 'तुम किसकी माँ हो मेरी मातृभूमि' -इस प्रश्न का मूल भाव आपके विचार में क्या है ?

9. और मैं भींज रहा हूँ
नाच रही धरती नाचता आसमान मेरी कील पर नाचता नाचता
मैं खड़ा रहा भींजता बीचों-बीच ।

-इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें ।

10. कविता में कवि ने स्वयं के भींगने को 'भींजना' कहा है जबकि सिंधु घाटी का चौड़े पट्टे वाला साँढ़, बच्चों के केश, नवोढ़ा या कौए के पंखों के लिए 'भींगना' । ऐसा क्यों ? क्या इसका कोई भौगोलिक भाषाई आधार है ?

11. शब्दों के प्रयोग में कवि अपनी पीढ़ी में अतिशय सावधान है । उसके सावधान शब्द प्रयोगों के कुछ उदाहरण कविता से चुन कर उनका अर्थ स्पष्ट करें ।

12. इस कविता में 'माँ' और 'मातृभूमि' की छवियाँ एक-दूसरे में घुल-मिलकर एकाकार हो जाती हैं तथा देश और काल के पटल पर माँ की प्रतिमा व्याप्ति और विस्तार पा जाती है । इस दृष्टि से कविता पर विचार करें और एक टिप्पणी लिखें ।

कविता के आस-पास

1. अरुण कमल की पाँच कविताओं का चुनाव करें और विद्यालय की काव्य गोष्ठी में उनका पाठ करें ।

2. कविता में कालाहाँडी, पलामू और नरौदा पटिया का उल्लेख है । ये स्थान किसलिए चर्चित हैं । अपने शिक्षक से मालूम करें ।

3. कविता में खुबानियाँ, अखरोट, मखाना और काजू का उल्लेख हुआ है । आप यह बताएँ कि ये मेवे कहाँ-कहाँ उपजाए जाते हैं ?

4. 'मातृभूमि' शीर्षक से मैथिलीशरण गुप्त की भी एक अत्यंत प्रसिद्ध कविता है । इस कविता को खोजकर

पढ़ें तथा प्रस्तुत कविता से इसकी तुलना करें और यह बताएँ कि आपको कौन-सी कविता अधिक प्रिय लगी और क्यों ?

5. अरुण कमल की प्रसिद्ध कविता 'धार' यहाँ दी जा रही है । इस कविता का पाठ करें और यह जानने की कोशिश करें कि कविता में 'उन लोगों' से कवि का किनकी ओर संकेत है तथा निजवाचक 'अपनी' सर्वनाम के द्वारा वह किस सामाजिक सच्चाई का संकेत करना चाहता है –

कौन बचा है जिसके आगे
इन हाथों को नहीं पसारा

यह अनाज जो बदल रक्त में
टहल रहा है तन के कोने कोने
यह कमीज जो ढाल बनी है
बारिश सरदी लू में
सब उधार का, माँगा-चाहा
नमक-तेल, हींग-हल्दी तक
सब कर्जे का
यह शरीर भी उनका बंधक

अपना क्या है इस जीवन में
सब तो लिया उधार
सारा लोहा उन लोगों का
अपनी केवल धार ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के वचन परिवर्तित करें -

   पौधों, रास्ता, बकरियाँ, पेड़, मजदूर, आँगन, पंखों, कौवों, रोटी, रूमाल, तश्तरी, गिलास, छप्परों, देहरी, हाथों, किसानों https://www.evidyarthi.in/

2. 'अनाथ' शब्द में कौन-सा समास है ?
3. कविता में उन पंक्तियों को चुनें जिनमें निजवाचक सर्वनामों का प्रयोग हुआ है ?
4. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें -

   आसमान, धरती, समुद्र, पेड़, माँ, दूध

5. निम्नलिखित पंक्तियों से विशेषण चुनें -

   (क) और काले पंखों के नीचे कौवों के सफेद रोयें तक भींगते

(ख) तब चारों तरफ क्यों इतनी भाप फैल रही है गर्म रोटी की

(ग) धरती का रंग हरा होता है फिर सुनहला फिर धूसर

(घ) इनके भींगे केश सँवार दो अपने श्यामल हाथों से -

(ङ) मेरे थके माथे पर हाथ फेरती तुम्हीं तो हो मुझे प्यार से तकती

शब्द निधि

हहाना	:	उत्कट अभिलाषा से भर उठना
कंदरा	:	गुफा
हिलोड़ती	:	हिलाती, हलचल पैदा करती
नवोढ़ा	:	नई-नवेली दुलहन
नक्काशीदार	:	बेल-बूटेदार
यतीम	:	बेसहारा
श्यामल	:	साँवला
तकती	:	देखती
गुत्थमगुत्था	:	एक-दूसरे में गुँथा हुआ
दुर्लभ	:	आसानी से न मिलने वाला
खुबानियाँ	:	एक प्रकार का मेवा
कालाहाँडी	:	उड़ीसा का एक क्षेत्र जहाँ की जमीन ऊसर है, वहाँ पानी का तल नीचे है, वहाँ जीवन बहुत दूभर है, यह स्थान भूख से मरने वाले निवासियों का पर्याय बन चुका है ।
बंधुआ	:	जो मामूली कर्ज के बदले में पराधीन बेगारी की जिंदगी जीने के लिए अभिशप्त हो ।